সত্থ্যাসার।

खर्चा न

हे दाकी ७ दोक्षको विम्यालयस हाजगटनद

পঞ্চুত, হড়্রিপু প্রভৃতি আবস্তানীয় সংখ্যার পর্যায়

নাৰ্ক্ষাং সু হিডাৰ্কায় ড্ৰিডাং প্লেকং ময়। তথ্য লোৱান্ পরিডালা স্তগ্ন গুলন্ধ প্ৰতিভাগ

> श्रीविभिनस्थितः सम्बद्धः स्रोतिकः

> > कनिकाउ।।

বুত বাবু গোবিক্চক্ত গুপ্তের ছারা সংবাদ সক্ষনরঞ্জন

যন্ত্রে মুক্তিত হউল।

ক্ষাখাঃ ১৭৮৩।
মূল্য ।•ু চারি জানা মাধ্য।

বিজ্ঞাপন ।

ব্যভাষা পাঠ করিতে যাইলে অনেকগুলিন সংখ্যার জানা অত্যাবশ্যুক, অধ্চ একালপৰ্য্যন্ত কোন মহা-া কর্ত্তক এমত একখানি পুস্তক মুক্তিত হয় নাই, যন্ত্ৰা-র ভদাবহ জাত হওয়। যাইতে পারে। আমি **এই অসম্ভাব** দুরীকবে প্রত্যাশায় প্রোহসাহিত হইয়া এই কুদ পুস্তক ্রনি সম্বলন করিলাগ। এতং পাঠে এই প্রাচীন ভারত-রাধ্র পুর্মাকাল-প্রচলিত আচার, ব্যবহার, ধর্মা, কর্মা প্রভৃ-^L 5ং কথাঞ্জিত পবিচয়ও পাওয়া যাইতে **পা**রে। **ইহাঁ যে স্ককু**-্বনতি বালকগণের পক্ষে কতদূর উপযোগী হইবে, তিছিল য স্পবিত্প গ্রিলান, তবে মধ্যে**২ ছুই এ**কটি ক্টিনতর সংখ্যা পরিত্যক্তমতে, ভাষার্দিগকে এই পুত্তক খানি পাঠ করান যাইতে পারে। **যাহাহউক এমত সাহস** ুর বাইতে পারে, যে ইংরাজী বিদ্যা**লয়ের উচ্চ শ্রেণীস্থ** তেতাহান্তরাগী ছাক মাত্রেই ইহার উ**পযোগিতা উত্তমরূপে** ময়ত্তৰ কৰিতে পারি বন। **তন্মধ্যে যে সকল পর্য্যা**য় **লিখিত** ^{হইল ভত্তাবৎ প্রায় প্রভ্যেক বাঙ্গালা পুস্তক পাঠ প**লে অভি**} भाव अस्याकनीय।

ইহা কি সামান্য ছংখের ও বিশ্বয়ের বিষয় যে ইংরাকী বিদ্যালয়ের কুতবিদ্য ছাত্রগণের মধ্যে অনেকেই পঞ্চ
ভূত কাহাকে বলে তাহা অবগত নহেন। তাঁহারা পঞ্চতকে পাঁচটি প্রেত বলিয়া জানেন।

অভএব পঞ্চতুত, ষড়রিপু এবং গপ্ত চিরজী বী প্রান্ত তি: আবাদ্রীয় পর্যায় ইহার মধ্যে সন্নিবেশিত মরা হইদ অপর মুক্তই ও অনাবশুক বোধে অনেকগুলিন সংখ্যা পর্বি ডা ডে ইইয়াছে। পুসক্রখানি সহজ কর্ণাশরে, প্রতি কটিন শক্ষেরই অর্থ লিখিত এবং প্রান্ত প্রভাক নংখ্যার নিম্নতা গো এক একটু টাকা এবং কুচিং এক একটু মন্তব্য বিষয়র নিখিত হইল।

সংখ্যাবোধক ও সংখ্যে পূর্ণবোধক এই দ্বিবিধ সংখ্যাবাসক সাধুভাষা শক্ষ এবং কডকগুলিন সাজেডিক শক্ষ সকলেরই জানা আবশ্যক বলিয়া পুস্তুকের শেষভাগে উত্তাৰৰ সনিবেশিত হউল। এফণে ইহা সর্বত্র পরিগৃহীয় ও বাবস্তুত হইলে মুমস্ত পরিশ্রম সকল বে।ধু করিব।

পরিশেষে সক্তজ্চিত্তে বিজ্ঞাত করিতেছি যে সংস্থাকালেজর স্মৃতি শাস্ত্রাধ্যাপদ শ্রীযুক্ত ভরতচন্দ্র শিরোমণি এবং উক্ত কালেজের সহকারী সম্পাদক শ্রীযুক্ত সোমনাথ মুখোপাধ্যায় অপিচ কলুটোলা ক্ষুলের হেড্পণ্ডিত শ্রীযুক্ত ন্যকাশ্ত ভর্তপঞ্জানন, এই কয়েক মহাত্মা এই পুকৃকথানি সঞ্জান পক্ষে বিশেষ সাহায্য করিয়াছেন। এমন কি ভাঁহার দিলের অন্তর্কা ভিন্ন আমি কথনই মদারক্ষ কার্যো সিদ্ধ কাম হইতে পারিতাম না।

्र स्वर्ध । १ ० ४०६११६ শীবিপিনমোহন সেন শুগু। প্রেনিডেলী ফালেন্স।

সুণ খ্যাসার ।

अस्त वस्

দক্ষিণায়ন --- --- --- --- --- --- ---- ---- ক্রি

অয়ন অর্থাৎ বৎসর।জ।

. 2

সূর্য্য পূর্ব্যদিকে উদয় হইয়া দক্ষিণ দিক দিয়া যে ছরসাস অন্তগত হন তাহাকে দক্ষিণা নন এবং উত্তরদিক দিয়া যে ছরসাস অন্তগত হন তাহাকে উত্তরায়ণ কহে।

পক ৰয়া

পূর্ণিবার পর অমাবজা অব্ধি সময়কে ক্লক পক্ষ, এবং অমাবজা ভুইতে পূর্ণিবা পর্যান্ত সঞ্চ- য়কে শুক্লপাছ কছে। অতএব প্নর দিন রাজে কৈলিক হয়।

ঋণ ত্য়।

লোকে বেদ পুরাণাদি গাঠছার। ছাবি আগ সন্তানোৎপাদনে পিছু আগ, এলং সভাদি সম্পা দলে দেব আগ হইতে মুক্ত হইয়া গাকেন।

जिलाक।

ভূর্নে ক	 ***	• •	*
'इरहर्न'क	 •		
प् लोक		***	*
		••	
			đ
at Ti			क्रांड
जार् <i>न</i>	ম ৰ্ভীং	লাক (দু	वस.

ভূব লোক	***	****	বিভীয়	লোক		
খ্লোক	****	স্ র	লাক, আ	मत्र भूत		
*	1	ত্ৰজগৎ ৷				
खुर्द	***		4 19-	4		
ন ক্য	• •	1-41	# 51	7		
3 M	4**		, e 4 0	5		
., .,				لسادفاه مكايد د بيشبني		
লিস এয়।						
ুং লিফ		****	***	>		
ন্ত্ৰীলিঞ্চ	4	***	•	>		
<u> শ্বিলিক</u>	••	7 5 405	٠	•		
				, C/		
		•		(3)		
	-	ত্রিগুণ ৷				
मञ्	****	***	***	٠ ٢		
ব জ ঃ	444	6.4	, 4 1	··· 5		
ভ মঃ		pt #4		*****		
				9		

. पदार्श ুলনু 👑 অক্রভির প্রথম গুন যদ্ধার। স্কি হয়। ঐ দিভীয় গুণ ঐ স্থিতি ক। হয়। **素動。....** ্তমঃ ... के उठीर चन के रुविं नाम इरा ভিতাগ : সাধি দৈবিক ... আধি ভৌতিক --আধ্যাত্মিক ৬ 4 আগ আধিদৈধিক বজাগাত, উল্কাপতি প্রভৃতি দে ভাপ নৈবাধীন দটিয়া থাকে। আধিভৌতিব যে ছুংখ মমুধ্য পশু, পশ্চী হই-ভে হইয়া থাকে। শরীর কিয়া মনেতে বাতপিত আধ্যাগ্রিক প্রভৃতির বৈষ্ণ্য জ্না বাকাম क्लांशामित योधिका निमिख स्य

मध्य हत

ভাবত্রয়।

1	*			1.16
পশু	****	-141	6424	
वीर	***	****	9646	
द्व तु	****	***	****	> 3
1 .				Report of the party of the last of the las
				12

বেনোক্ত বিধানে শক্তাদি পূজা ফর্মার।

ইতিহাকে পশু ভাগ কছে। নহা আড়মা

করারে তন্ত্রোক্ত বিধানে ঐ পূজা ফর্মারাহয় তা
কে বীর ভাব বলা থায়। এবং নদ্য মাংগ

শংশপ স্থারা বিনাড্যরে ঐ পূজা ফ্রারাহর তা
শক্তে বিব্য ভাষ কহা যায়।

	অপর	ভাবত্রয় ৷				
শ ান্ত্রিক	.***		4***	****	` 5	
াজ্যিক	4987		474+	4586	5	
ভাষ্দিক	. 444	** *		****	>	
					-	

কেবল ধর্মার্থ জ্ঞানৈখর্য্য প্রকাশকে সান্ধিক ভাব কহা যায়। কান, কোধ, লোভ, নসম্ভোব

का के किएक	রাজ	স ভাব	বলা যায়	1 3	डे में जान	ا زیامیک
निजानगा,						
रहार क्रांश						

নিকালস্য	, कर्म दे	वखना निष	র্মতাকে	ত মন	ड िर
रहा भार					
* ,		ত্রিকাল	l	,	
20	744	***	***	401.	*
ভবিষ্যৎ	411	.,		,,,,,	
বর্ত্তমান		1926	***	1144	
C1				•	
भ क				Æİ	¥,
ছু ত	****	y 10 4	.487	অৰ্ড	ैठ
ভবিষাৎ	•		****	অনাগ	T
दर्शन	*155	* 1	A.,	উপ্	E E
देवघ	[क्त्ररनद्	देशे क	লত্রধকে	অনেক	31-
কারে বিভ	ভ করিয়	াছেন। ফ	লতঃ এহ	লে অ	না
্বিদ্যোদ্ধ তা	হ্ বক্তব্য	নহে ৷			
Margar Control Control San A	অপ	র কাল	ब्य ।		
वीना	47.84	****		-+	<i>\$</i>
दशोवन	***	****		***	>
टार्फका.	, 74.				\$

-८क्ष्ये ट्योगंवदाटक काल विदेशक शतिशः বিভ কবিয়া থাকেন। मसुष् जीवन धरेकाल हिन्छू शिख्डिमिर्गत -খাণে তিন ভাগে বিভক্ত হইয়াছে। দশাত্র। \$ 214 গভীর নিজাবস্থাকে সৃষুপ্তি কছে। जिद्दां य। 475 'পস্ত 1.79 ... বারু। ··· শরীরের তিজ ধাতু।

(東京)

ふち

এই দোষতায় না ধাকিলে শারীরে স্বস্ত গ্রামনা-ু গমন এবং শ্রী*: রক্ষা করা ভার হইত*। বায়ু, ক্ৰাঞ্জৰং জল দ্বিটি যন্ত্ৰ বিশেষ চালিত হইয়: थांदर्क ।

পদাথ बद्या

চেডন ক্ষাচেত্ৰ डेसिम

'ই প্র

চৈতন চেতনা বিশিষ্ট পদার্থ যথ। **অস্থা**দি।

ক্লচেতন চেতনা বৃহত পদার্থ বলা পুতকাদি।

यां हा ज़िन (जरम जरम यथा नजामि।

শক্তিত্রয় ৷

কর্মাত্রয় ৷

্নভা		pesu 1	2.40	5
্নিমি ত্তিক	****	****	****	5
ক্ষা	** 15	****	****	5
			•	
				•

যাঁহা না করিলে পাপ হয় ভাহাকে নিভা কর্ম বলে। কোন কারণ বশতঃ যে কর্ম করিছে গম ভাহাকে নৈমিজিকু এবং কামনা করিয়া যে নার্য্য করা হয় দেই কাম্য।

প্রমাণ চতুফয়।

্ৰত্যক্ষ	****	***	****	्र ्री
<u>থারু</u> য়ানিক		,	****	5
ইপনানিক	.***	****	+***	5
^াব্দিক	#4.0	** *	****	>

যাহা ইন্দ্রিয় থারা অনুভব হয় তাহাকে প্রত্যক্ষ প্রমাণ কহে। ফল দর্শন করিয়া যাহার হেতু দির্দেশ করা যায়,ভাহাকে আনুমানিক কহে, বিশা পূখ দৃষ্টে অনি নিরপণ করা) পরস্পর বিশিষ্ট্রপর্যাকার একের দর্শনে অন্যকে নির্দেশ কুরাকে উপমানিক বলা যায়। আগুবাক্য অর্থাৎ ইদ্বরাণী প্রভৃতি বিশ্বস্ত নাক্যকে শান্তিক প্রমাণ

र्द्धा

চকুরেদ।

শান

হিন্দু শাস্ত্রমতে বেদ অপে রুষের অর্থাৎ কোন পুরুষ কর্ত্ব নহে। অনাদি ত্রন্ধা, অগ্নি, বায় কবি হইতে গরুর পালানের ছুগ্নের ন্যায় প্রকাশ মাত্র করেন। এবং মহর্ষি বাগে উহা শাখা প্রভেশে বিভাগ করিয়াছেন বলিয়া ভাঁহার নাম বেদব্যাস নামে খ্যাত হইয়াছে।

- চতুরাশুম।

asels" sees

প্রসূচ্**র** কার্ত্য

ামপ্রস্	. 6.0.0	2 年 報 學	49.84	p+4+	*
To the state of th	****	****		****	· 🔊
				•	8

বানপ্রস্থান্ত্রনার বনে বাদ করেন। বছ গ্রাব্ধি ভারতবর্ণায়েরা উপরি উক্ত আশ্রম ্নুক্তর বিভক্ত হইয়া এই ভারতভূদে বাদ করি-লেখাদিতেছেন। তথ্যে গৃহস্থান্ত্রনার বিরাহ লেগে অধিক ও বানপ্রস্থান্ত্রনারলিয়িরা অভি

চতুৰ্বৰ্গ ৷

এই বর্গ চভুষ্টায়ের মধ্যে কোন না কোন্দ গাই প্রায় নমুষ্য নাত্রেই পাইতে ইচ্ছা করিয়া

,	চ	তুর্ব।	
্যান্দণ	****	***	****
ক <u>তি</u> য়	- 4 **	,	••
टेन खे	***	****	.***
শূদ	***	441	,,,,

অভাদেশে পূকাকালে ব্রাহ্মণের। বাল ক্রিয়া দশ্যাদনে, বেদাদি ধর্মশাস্ত্র পাঠে এ বাবজাদি দিভে। ক্রিয়ের। রাজ্যভার গ্রহণে ও রাজ্য রক্ষার্থ। বৈশ্বেরা ব্যবসায় করিছে এ শুজেরা দাসভ্তার্যা নির্কাহ করিছে আলিও ও কিতেন ও দেশাচারদারা থাকিতে বাধ্য হইণে ও পরিমাণ চত্তীয়া

	9			
STICHM	****		***	****
তাল	,***			
গোকণ	**** (* * **
বিভব্তি				****
•				

14

প্রাদেশ চক্রনী সহিত বিভ ক অঙ্গু।

ट'ल	-মধ্যমার	সহিত বিব	ত অফ্	È;	
্ৰংক্তৰ্	অন্'য়ি		में थे।	•	
নিশ্ব জি	ক নিষ্ঠা	। ঐ বা বিশ	হ অথাৎ	হ্সাদ	र्वे ।
	য়্	া চভুফীয়	l		
7.33		***	1879		3
<u>"a"></u>	****	** *			3
হ পর	8 * 6 1	9 N w 3			3
offer	***	***	***		3
					. 8
	চতু	वंथ याम	1.	. مه س	. 8
(स ो ड़	চ হু	विथ माम।		· 40 mg	8 .
নৌর স ভ্র	`			* # m	8 .
	`				8 3
গশু ়	`	***			8 3 3 5
श ञ ् शहरू	`	***			· 8

হুৰ্য্য এক রাশিতে যাবৎ কাল থাকেন তা-ভাকে নৌরমান বলা যায়। চাজ্রনান ছুই প্রকার মুগা চাজা ও গৌণ চাল্ড। শুক্ল প্রতিপদাদি অমাবদ্য। পর্যান্ত মুগ্র হাল্রা কৃষ্ণ প্রতিপদাদি পৌর্বমাদী পর্যান্ত গোল হাল্রাইম। সাধারণতঃ তিশদিনে যে নান হয় ভাহাকে নাবন নাম কহে। অন্থিনীনকত অব্যি রেবতানকত পর্যান্ত যে কাল তাহাকে নাক্ষাকিব নাম কহে।

ক্ষিতি-মৃত্তিকা। অপ-জল। তেজঃ - হাই: সরুৎ-বায়্। ব্যোম্-আকাশ।

·ভারতবর্ষীয় প্রাচীন পণ্ডিতদিগের মতে এই পঞ্জুত করণক মন্ত্রা দেখা নির্মিত হইয়াছে। ইউরোপীয় অধ্নাতন পণ্ডিতেরা দিবতি

अकात जाक चारक देश जिल्ला कविशास्त्र ।

Č

ক্	र्मान्तुय वा	বাহ্যেন্দ্	্য় পঞ্চ।	
110	7981	****		3
5 PE	* ex****	***	4 42 ± 1	5
সূপ র্	445 h	****	* *	*3
Nº 9	#**1	***	4-4	5
डे पश्	(# 1	** *	****	>
			€ 0 ce ⁿ ·	-
				· ·
প	ায়ু-ওহাদেশ	এবং উপস্থ	-निक्	
	<u>क</u> ुदार-	न्दुय शक्षा	Į	
5要性。	***	p- +t	4-81	3
रह म	4 .	* ***	4 * * * *	3

ইহাদের কার্য্য। কলু, শব্দ, আৰু, রুম এবং স্পর্ম।

ন' নিকা

জিহ্বা বুক

অসুनि शक्ष।

पारत्थे । पार्कानी	****	****	4 = +	
ডজেনী	. • • •	, ***	****	•
মধ্যনা	•••	****	49	
অনামিকা		***	***	
क निष्ठे।	94 B1 14	***	*161	;

অন্ত-র্দ্ধাঙ্গুলি। ভর্জনী-জনপরাস্থিতি এবং এইৰণ ইত্যাদি।

ſť,

शक्षाता।

গোময়		****	***	•
গোদ্ত	***	****	***	•
क्षि	7847		****	
হুক		a. 1	****	
মূত	***	y***		•
				Contract of

লক্ষীনারায়ণ্ প্রভৃতি দেবতাদিগের সা

जना ७ जनाना भूका छेभलाक भक्षणातात गाव-रात रहेता थारक।

	পথ	াম্ভ ৷		
ष्ट्र भ	マ共衆軍	- 20-		3
६ थि	1881	****	****	5
ষ্প্ৰ	44.04	1440	***	3
মধ্		2124	***. ***	5 _
চিনি	9 * 18 9	****	***	>

অক্ষেশীর বালান্ত্রীদিশের দ্বিতীয় বিবাহ কালুদিতে পঞ্চায়ত পানের প্রথা আছে।

	পঞ্	विषे ।					
व्य श्रेश	** **	* ** *		41		5	
तिन् बहे	****	***				3	,
	1966	****		4881		5	
ধাত্ৰী	9962	r###	,	***		3	ķ
षरनांक	en and	****				5	
					Sporter Section 1	-	1

थाती वर्धाय कापनकी इक ।

প্রাণ্টিশেষ পুরাক্ষা বলিয়া প্রতিপর হরেন।

পুঞ্চলবণ!

ক্রক্চ	****	. 104	***
टेमञ्चन	***	***	***
माभू अक	****	10	***
বিউ	***	**	****
সনি	••	***	***

পঞ্চর।

স্থলচর		* **	. * * *
ज् क्ष ५ र	41.4	** * *	****
উভচন		• •	##RV
मि वांस्त्र	••	****	4 • 4 4
নিশাহর		****	,***

এই পৃথিবীয় সমন্ত জীব ই পাঁচ প্রকার গ্রেপ্রাকীতে বিভক্ত হইয়াছে। প্রকার বিশ্ব

। এতাদ্শীয়দের জীবিকা নিকাহার্থ ধানা। ৪৯ মানশ্যক বেইহা মুদুবলিয়া উক্ত হুখুরাছে।

शक्तमा।

•				
शंबा	.***	****		• .
जुला ।		4014	***	5
ভিল	***	**	****	•
ঘৰ	A US	***	> ***	

খেত গৰ্মপ

মুকা অংশিং মুগ এবং মর্যপ্-সরিষা।
এই পাঁচ প্রকার ভিন্ন অন্য প্রকার শ্
নাই এমত নছে। এডাবতা এই কয় প্রকাশ
শিদামধ্যে থেঠ। শারদীয় মহাপুজার মৃতি
নির্মিত বেদীতে গ্রুশদ্য বপন করিয়া থাকে

शरकाशहात शृह्य।।

			١.
গ স্ম	w = # H	46-4	
भूष्य	****	te p	**
धूल मौश	£15€	***	
मीश			***
टेन टवमर	ивер	****	

্ বেবতাদিগের পূ**জা সামান্যতঃ পঞ্চোপ**-চারেই হুইয়া থাকে।

পঞ্চ উপাসক।

गीवश्रका

ı		, সংখ্যাসার।		\$, \$	>
r.3	44.4	p. #1	gy at the s	776. 8%	\$
्रेड्यू र	****	. +4+	4.81		5
PAIR		***			>
arties		,,,	***		5
			,		æ .
*(7,			ত্যধ্		
ণ,ণপত্য			গণেশের ই	छेशां गर	\$ {
নৌর	. 17	* **	স্ংগ্র		ه
रेदप्डन		•••	विकृत		ঐ
CA(E)		****	শিবের		B
3	****	***	শক্তির		ঞ
		পঞ্বাণ	1		
অরু বি ন্দ		***			•
্ৰাশেক		1 ***	*	,	>
চুত (আ	ম)	****	,***	****	>
নবম[ল		****	4444		>
নীলোৎ		***	s###	****	>

The state of the s

46.40	45314031						
	বৃদ্	কালে	উল্লেখিত	পুদ্ধ ক	য়েকটি ২		
CR	বেবু বাণ	বিৎ চ্	हेब्रा मञ्जूर	্যর অন্ত	ঃকরণকে 🎨		
या							
		ভা	পর পঞ্চ	বাণ!	ŧ		
्र भर	याश्न		***	****			
*	पांतन		5 · · · ·	• •	※な巧か		
(M	1 ৰণ	,	166	****	4 **		
	পন		, 4	•••	WV 1		
' श्र ः	y4	•	**				
į.							
15							
,			যড় রুদ	1			
ঝা	E		,***	***	w 31.60		
वा	न .		***	***	6818		
स्व		***		4200	• • • • •		
কট্			-···	***	77.4		
fe	ন্ত .		****	****	p 44 dittr		
ক্	ta -	****	m P#%.	***			

স্বাদু-মিউ। কটু-তীত্র-কাল। আহারীয় প্রত্যেক ক্রন্যের আসাদ উপ্রি শিক্ত কোন না কোনটি রদের বহিত ঐক্য।

lim.	ষ	ড্ ঋ তু ৷		
affic.	4974		** **	>
2前 2前 考以之 上之子写 2013 113	***	- 0 6	4 *##	5
462	47 4	a1 % 40	1 4 4	ĸ
.५.६ ख	and A	* ****	, 4400	2
*15	**** 5	***	1001	
াব 😘	4 940	55 P	6001	
ř ř				Apple Shape

ঋতু ছারা বংগর বিভাগ।

. 401

	₽ `	-
E	e u tu tu	देनमाथ उ देक्छे।
दर्घ।	****	वागां ए छात्।
শ্রৎ	***	- ভারত আধিন।
ংহ্মস্ত	****	কার্ত্তিক ও অগ্রহায়ণ।
শীত	4100	পৌষ ও নাম।
বস্স্ত	•	্ ক্ৰিণ ও চৈত্ৰ।

याम।

विमाञ्च गर्छ।

	,		
किया।	***	4441	***
्कृष्टिः ग	** *	***	
- तारीकृत्व	• • • •		4***
নিক্ত			.***
इ. भ ः	45.5	. ***	40.
(का िंख्य	****	4941	,
			_

যত্রিপু।

<u>কাম</u>		****	
ক্রোধ			•
লোভ	u* >		***
নেশ্ছ		,	****
স্প	•••	••	and the
মাৎস্থা	***	* *	den j

্মোহ-অজ্ঞান। মদ-মীত্রতা এবং মাৎদা প্রসিংহা, প্রঞ্জিকাতরতা। মনুষ্য মাত্রেই এইছয় প্রকার রিপুপাবিশ। ভন্মধ্যে প্রভাবেতেই কোনটির আধিকাত। ও ্নোনটির অণপভাবিলোকিত হইয়া থাকে।

এই ছয় প্রবার প্রধান দর্শন শাস্ত্র আমা-দের দৈশে অতি প্রাচীন দাল হইতে প্রচলিত আছে।

	্ষ্ড বি	ध टेमना ।		
নৌল	****	***	***	*
éal	, +44e		et	(A)

ু সুর্

	अ	ংখ্যাসার।		रं∳	
স্পিঃ	shar	pank		18	1
FT	****	****	4 4 3	\$	
ট্ ঞ	3***		4494	15	
क स	4.94	P# 84	化中凝塑	\$	
				metrophs.	ļ
	3-6			9	

প্রাচীন হিন্দুরা একসমরে যে অভিমাত সভাধকরার সংস্থাপিত হইয়া সপ্তদীপ প্রভৃতির আবিক্রিং সম্পাদন করিয়াছিলেন সন্দেহ নাই,থেহেতু
কর্মাগরের প্রায় স্কাস্থানেই গ্যনাগ্যন করত
ব্যাপত্র জলের আস্থাদন ভেদে তাঁহারা স্থাবক্রিং নহাসাগরকে সাতভাগে বিভক্ত করিয়া
গিয়াছেন।

		সপ্তবি	1		, , , , , ,
खीह	44.	4***	,**.	****	5
সাত্রি	••	****		****	>
দিসিরা	****	,444	, 104		5
वृत्तखा	****	****	****	***	5
শুলহ	****	•••	***	***	Ś

86	मर्गागांत्र ।				
ক্র	****	****	****	***	•
र्श्व छ		***	****		
4					

मध िता की वी।

many on the state of the same of			
, काम्यार्ग्याः	***	***	** *
यांचा	. ,		• •
KIIS		.,,	
'হত্ম ১	.,	e *	***
रि डो नः	** *	• •	•
इशाहार्यः	• •	- • •	** 4
न्य छत्।	544.4	,	

অন্যানদের শাত্রে উলিপিত সাতজন আন বিলিয়া উচ্চ হটকাছেন। রামায়ণ ও মহাভার পাঠে উপারি উচ্চ নহারা ময়ুদাবের জীবনচরি। নাবিশোসভাত হওয়া ধাইতে পারে।

मधत्रथी।

319	****			>
্ৰাপেয় (কৰ্)	· ••			>
-শ্ৰাচাৰ্য	***	****	**	3
ल अव्यक्ति।				5
क कृति	,	•	1/42	3
্ হৈয়াধন				3
पुःसानन			••	5

1

এক সমাধ কৰিব মহাবিধি আজে নিকে অন্যায় মুক্তে মনত স্পায়িত করেন।

्याः स्वातः दश्यः अक्षेत्रप्रभावणाः वर्षः

সণ্টা ।

¹⁷ N	••	****	•	3
2,38	****	***		3
-:'म्यूजी		**	****	>
কুশ	e 11 ib +		-194	>
क िश	***	**	*49	*

मिक्षिताल को बील मश्राम देखि वारह श्रीति इग्र उन्हें उन्हों एता के इर्ग्य मिला नामाना तृक्षिक निल्ल डेलित डेल ग्रुबी एत भाविति इन्हें विद्या जिलान, जानत जोत प्रकृता मानिक विद्या जिलान, जानत जोत प्रकृता मानिक विद्या जिलान है है। निश्च कारण य, डेलिज अप्याक बील, नत्न, हेकू बाहरि श्रीत्वा भाष्ट्र भित्र विद्या कि नत्न व्या अपार्ष्ट्र-निया कहे ज्याप नत्ति कार्यन केर्या जेला मानिक हैं हारी होर्यन अप्रकृति प्रतिक व्या जिला मानिक हैं

मध्डी।

প্তিত্ত	***	19.4	*=#1	
कूल हे '	****	••	. ••	2
इवली		, ,,	****	1

प्रक्ती	****	• •		1
বেশ্যা		•••	****	*
गुन्नी	• •	. * 9 %		5
মহা বৈখ্য	4+41	***		3

প্রথমে জি ভিন্ন অপর কণকটি শব্দ প্রার অভেদে ব্যুবগ্র্য হুইটা ধানে।

9

পৃথিবীয় যাবভাগ ক্রা জাভেই নিজং চিলং স্থান্ত ও চাত্র তেনে এই সাত প্রকারে বিভক্ত হুইয়াছে।

मथिशा।

कना निष्ठ।		•	** **	>
অন্নদ;ভা	••	****		5
छ। समाचा	***	*1*	***	>
अक्तमांट!		494,	****	3
खग्राम (ज			***	>
रक्षण उ		4***	. 4 6 1	Ž

শুক্র শ্বি 2

٠)

কি বাঙ্গালা, হিন্দী বাই বাজী আছ নকল ভাষাতেই বার সকলের নাম, প্রথানি হইছে। ভাষাতেই বার সকলের নাম, প্রথানি হইছে।

मव यस्।

यामी

	मंश्यामात्र ।				
এ মাত্র	10.19	1 p 4 d m	g 6 a-	3	
५कर्	*****	بمرغمه ا	1444	, 5.	
কোষ	****	+0 441	9+		
র:কু (রাজ্য)	****	***	* + **	Š.	
ฐต์ [®]	***	4 4 4 4	ç	35	
ল					

94

রাজ্য বিশেষে উল্লিখিত, মপ্ত অঙ্গেরই আবস্থাক হইয়া থাকে। যে রাজ্যে অফ বিশেন যের অসন্তাব হয়, তাহা সম্বিক প্রজিনশালী বলিয়া পরিগণিত হয় না।

	व्ययः धा	ङू १	
হিরণী (স্বর্ণ)	***	****	8 m = 5
রুজড (রৌপ্য)	4786	****	
কাংক্ত (কাঁ্যা)	****		3
পীন্তল	****	** ***	***
ভাম (ভাষা)	***		more of the

\$8	নং খাসরি।			
गोगा	4 20		***.	
'রা'ঙ	****	*** 1	• ••	
্লৌহ (লোহা)	a edit	\$ # B C		

বিষ্ণু দেবতানি অনীধাতু গঠিত চইয়া পাকে বোগোদন বা বন্তবিচার পাঠে এই সকল ধাতুর গুণানিবিশেষ জানিতে পারা যায়,এইফালে এই পৃথিবীর নানা স্থানে নানা প্রকার ধাতু খনন ইইতেছে। বস্তুতঃ একের সহিত অপর ধাতুর ধোণেও অনেক ধাতু উৎপন্ন হয়।

বিবাহাফক।

ত্ৰা আ		PF+Y	# 4m E	4
ेटेसव	1 # 4 #	141	****	3
আৰ্থ	15.96	4.84	का चेक का चेक	, 'aş
প্রালাপত্য	****	, , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	******	5
े मा छूत	L #***	****	****	*
ाष्ट्र		a vės	# .064	ķ

পূর্বকালে এই ভারতবর্ষে উপরিউক্ত অন্ট ^{প্ৰকার} বিবাহ প্রচলিত ছিল, আহ্বান পূথাক বি-খান্ ব্যক্তিকে যে বিবাহে কন্যাদান করা হয় জাক াত্রক ত্রাক্ষ বিবাহ কহে। যজ্ঞাদি আরম্ভ করিয়া ুরোহিতকে যে কন্যাদান করা হয় ভাহাকে দৈব বিবাহ কছে। একটি গাভী অথবা গোমিধুন বঙ্কেব্ৰ নিকট লইয়া যে বিবাহে ভাঁহাকে কন্যা দান করা ^{নার} তাহাকে আর্থ বিবাহ বলাবায়। ৫ তোমরা धरेक्टन गरिया कर्म कब्नु, अरेक्टन अवस्य वाक्रु ^{বেলিয়া} অনুভার অর্জনা পূর্ব্বক যে কন্যা দান স্পু ৰ দান যে বিবাহের সম্পানক ভাহাকে প্রাঞ্ শভ্য বিবাহ বলে। কন্যার পিতাদিকে ধন প্রদান করিয়া **ড়ে বিবাহ সম্পন্ন হয় ভাহাকে আহ**ঙ্ক বিবাহ কহে। কন্যা বরের **পর**ক্ষার অসুরাক্ষ শালিকনামি ব্যাপারানতর যেবিবাহ হর তারাকে

শ্রাধ্যক বিবাহ করে। হরণ সময়ে যদি পিতৃত্ব প্রতিকুল হয় ওবে তাহাদিগকে হননাদি করি লা এ, কন্যাব যে দান তাদুল দান যে বিবাহের শিপাদক ভাহাকে রাজ্য কিবাহ বলা থব নিদ্রাতে অভিভূত বা মদাপানে মন্ত্র যে কলা ভাহাকে হরণ পূর্বক অর্ণ্যে গমন কর্তঃ বিবাহ হয় ভাহাকে গৈশাচ বিবাহ কণে ভারাকীয় বিবাহ অপেক। পৈশাচ বিবাহকে অন্

অফবসু ৷

•				
अ जू	***,	****		
ধুব লোম বিক	***	***	****	
শেম	****	****	***	ŧ
বিকৃ	<***	****	***	- ,
पनिष	aran J	****	profin.	*
WAR	***	.444	****	1.35
र्वाज्ञान	**** ********************************	pea-	****	

প্ৰভাৰ

S 5 1

ইংরাই মহবি বশিষ্টের কাম্যের অপন্
হরে করত তীহার শাপ্তামে গঙ্গার গর্তে জন্ম

এইন করিরাই অমনি মনেবদেহ পরিত্যাগ পূর্ব্ দিনা লোকে শ্রমন করেন। তক্সধ্যে বিনি
গপ্তরণ দেশের বিশেষ দূষিত ছিলেন তিনিই
কেবল ভাষ্ম নামে গন্ত জাবন নরলোকে থাকি
নি মুক্ত ছয়েন।

(সহাভারতের আদি পর্কার্থত শাখ্য রাজান স্থিত স্থা গজার বিবাহ অংগ্রাঃ)

	নবগ্ৰ	रिहा		
इदि	244		***	3,
সোম (চক্ৰ)		**	,	>
नक्र ल	表 心境的	****	. **	`>
যু ধ	ahas	4 N & 9	12 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	. %
রু হস্পতি	****	-	# 4 E	
ও ক `	**** **	> 745		
	শ্ব		. 3	, ""

\$ b-		मर्थाम इ				
শ্বি	٠		2000		p* 43	
রাহ		****	400.		****	
ৰেছ		****	****		1000	•

অধুনাতন জ্যোতির্বিদ্যা বিশারদ্দিশের
বিশ্বত সূর্যা গ্রাহ বলিয়া পাণা চরেন না। উপরি
উক্ত নবগ্রহ ভিন্ন শিরিজ পালান, জুনো এবং
ক্ষেত্রা প্রভৃতি অনেকানেক কৃত্র গ্রহ আধুনিক
ইউরোপীয় জ্যোতির্বিৎণণ কর্তৃক আবিদ্ধুত

ইইয়াছে।

'hai'	4	বরত্ব।		
্ধ হন্ত ি	***		****	5
ক্ষপ্ৰক		使 中传统	****	5
অমরসিংহ	****	41.44	***	
***	4 p * **	484	****	5
বেডাল ভট	1.64	****	· webe	
শট্শপ্র	****	****	مقع	1.5
क्रालिमान	F	5 AMB 9	*#** j	E . 5

বরা**হ মিহি**র

ব্রুক্ত টি

• এই মহাত্মার। মহারাজ বিক্রমাদিকের। নৃত্যা, বত্ন সদৃশই বিমণ্ডিত করতঃ সংকৃত ভাষার বিশেষ উন্নতিসাধনীক্রিয়া গিয়াছেন।

र्गिलक्ष।

আচার
বিনয়
বিদ্যা
প্রতিষ্ঠা (গৌরব)
তীর্থদর্শন
নিষ্ঠা (আছা]
রভি
তপঃ

50

যে সকল ব্রাক্তিরা এই নবগুলে গুণাছিত ছিলেন তাঁহারদিগকেই ভূপতি বল্লাল কুল ছোণীকে সংস্থাপিত করিয়াগিয়াছেন।

দশাবতার ৷

37		44 3 44 4		
भर,गा	***		***	
कृष	0 P 10 0	#1 ##	****	
वजार	4.4.6.4	₹.,	***	3
न् रतिः ए	. # # *	<u>:</u>	***	1
ৰাখন	p 7 0 4			3
वीगमभा (श	রৈশুরান)	****	49.84	`
রাম	4.00	***	****	, "
कुराव	** *	****	.***	3
नुका	****	9818	4 4-8-65	0.0
কৃত্	a + ±+		****	<u>چ</u> ر
,				
				, ,

ভগবান নারায়ণ উপরি উক্ত পর্যায়ক্রনে জ্ম ক্লাহণ করিয়া এই ভারভবর্ষে যুগে২লীলা সম্পাদন ক্লারিয়ানিয়াছেন, এইকুপ পুরাণাদি হিন্দু শাস্ত্রে ,লিখিত আছে, তন্মধ্যে কক্ষী, অবতার রূপে এই ক্রণে আবিভাব হয়েন নাই। বিফুষশা নামক ব্রাহ্মণের স্থাহ এই ভাবী অবতার জন্ম প্রহ্মা করিবেন।

कन्की भूतांरा निथिত चाहि।

দশ সণ্কার।

-		-		×, 1
विक्रमन			*#14	*
भू श्मवन			****	_•5 `
<u>শীনভোম্যন</u>				•
জাত কৰ্ম	\	****	****	5
निक्रु भग	****	8704	5000	>
নামকরণ	p3 # h	, 2 64	+P#1	>
অন্নপ্রাশন		****	,544	5
চূড়াকরণ	***	****	K+##	. 3
উপনয়ন	****	***	4883	5
বিবাহ	4646	· ##+	#4 # s	3 3

मर्गापक १ स्थित रेन व उ अ र म्मपिक शान। শৈতৃপতি (বন)

राष्ट्रण '	4900	Ti	****	, لا ن "
र्गकृष	****	****	66 Pa	*
কুবের	****	****	****	* *)
के ब	****	90' * 6	****	6.5
উৰ্দ্ধেত্ৰদা	***	· # 4 H	. 170	
অধুসি অনন্তঃ	***	4***	****	3



দশদিক পা**লে**র দশদিক বিভাগ।

-1	1142	1130-1	Mark and A.		,
দিকপাল		***	4044		निक
रे स		****	é R e d	**## *	পূৰ

<u>র্</u> কি	4061	4 ***	****	'অগি
পিতৃপতি যিম	****	. 744	****	ए किन
নৈশ্ব ত	>+**	****	****	देन्य छ।
বরুণ			****	পশ্চিম
ম্ফুৎ	87 14	****	****	বাৰু ৷
কুবের	• • • •	****	4999	উত্তর।
BW.	****	***	****	क्रमानु ।
ভ্ৰ শা	2444	4 4 4	***	041
चनसः	****		4***	, অধঃ ৷
् म	শোগচ	গর পূত	ナ	
शोगः	****	***	****	>
व्यर्ग्य	****	***	48+4	5
चाठमनीस	***	.**	***	4.5
্মধুপর্ক (অভাবে	ৰ স্থানজ্	त्रः]	****	5
শাচনন	46+4	h 6 d r		>
গ্ৰন্থ		****		>
				_
4	2-64	***	4444	5

দীপ टेनटवर्षर

দশোপঢ়ার পজা সামান্যতঃ না হইয়া বিদ **्या** क्वांच्याच्याय हरेमा शास्त्र। वस्त्रकः मान भाइनिकः इहेरले इसि गाहै। के इस्ल मर्गिः-গচার পূজা নামানা প্রায় প্রভাহ হইয়া থাকে।
দ্যানা সন্তান।

	3.			
बुद्द म	4020	***	****	>
ক্ষেত্ৰ	***	***	****	
मखक	4 * * * *	****	***	*
ক্ষত্রিম	n # 2 #	****	***	•
গুর্ঢ়াৎপন্ন		***	4***	>
অপবিদ্য	44 24		***	,
কানীন	****		+ + + + + +	1.5
সংখ্যত		***	***	3
কীত	-01	. ***	. * * *	1
পৌনস্ক্র	****	* ***	" (เก่นสู่น	\$

শ্বাহ্যপথ

নিবাহিভাত্রীরগর্ষে সামীকর্তৃক উৎপাদিতকে ্তিরস বচ্চে,স্ত্রীতে বিশানক্রমে অন্যদার উৎশ্রা-দিতকে ক্ষেত্রস। নাতা প্রিত্যু কর্ত্তক দর যে পুত দে দত্তক। স্বজাতীয়, পুত্ৰীৰ্থাক্ৰান্ত কে ন বাল-ককে পুত্র করাকে ক্ত্রিস করে, সাহস্য ভার্যাতে ! গোপনে স্বন্ধাতীয় জন বিশেষ কর্তৃক পুত্র উই🛩 পাদিত হয় এমত পুত্র গুঢ়োৎপন্ন। মাতা পিতা কুৰ্ত্ব পরিভাক্ত বানককে পুত্রৰূপে স্বীকার করা অপবিদ্ধ। বিধাহের পূর্বের কন্যার পিতৃ श्रह (४ भूख इस म कानीन। गर्डयूक कनांत्र ৰিবাহ পরে, ঐ গর্জ্জাত পুত্রকে সংস্চৃ কচে। পিতা মাতার নিকটে অর্থধারা যাহাকে কেনা হয় সে ক্রীভ। বিবাহানন্তর পুনর্বার অন্যের ভার্যা ছুওডঃ যে মন্তান জন্মে ভাহাকে পৌনৰ্ভব। সাভা প্রভাকর্ত্তর অকারণে ত্যক্ত কি মাভা পিতা

, সংখাসার। ৪৪ বিহীন বালক আপনি অন্যের পুত্র হয় যে স্বরং দত্ত। ব্ৰাকণ কামাশক হইয়া শুদাতে যে **পুত্ৰ** [%] छेर भागन करतन छोडा क भारत्य करहा।

हाम्य गाम।

देव गाथ	4949		****		٠,
ें बाउं	***	4	****		5
শ্ৰাব্য চ	**			4447	>
ভাবণ	****		****	U 1.09	5
ঠাঁড			****	#1# #	5
আশিন	4***		****	***	,5
কার্ত্তিক	**4			****	'*
অগ্ৰহায়ণ	***		***	4 # 6 #	3
পৌষ	1 ,440		***	****	3
ষাঘ	****		****	4200	>
ফাদ্ধণ	**		4/74	v 17.6	*
टेठक "	444	****	10,00	****	(5)

मापन तानि।

८यव	***	및 난 선 역	****	\$
इष	****	+4+6	47**	>
মিখুন	444	*/**	****	Ψ.
কৰ্ক ট	****	1.00	***	*2
ति श्ह	***,	4414	****	•
कन्त्रा			# # 5 # #	1
তুলা `	****	***	***	٠,
ব্লশ্চিক (বিছা)	0.07	****	3500	*,
ধন্ম	****	4278	4040	•
मक द	****	****	****	*,
কুত্ত	****	w/ 9%	****	4
कु ड मीन	**/*	****	p=++	٠.

33

ক্ষোতির্বিৎ হিন্দু পণ্ডিতদিরের মতে ক্র্মা বংশরের মধ্যে মেব, রুব প্রভৃতি এই মাদল রালিচক্র এক বার পরিজ্ঞমণ করেন। ভ্রমবো বৈশাধে মেবে, জ্যৈতি রুবে, সাবাদে

प्रथम ध्वर	এইবপে	टेघ्टब	শীন	র:শিতে	অ 17-		
ইতি করেন							
পঞ্চদশ তিথি।							
প্তি প্ ।				4447	•		
হ হীয়া	1424			****	5		
المناوي ع					5		

क श्रीश	1412		** **	•
इ.की.पा	,***	****	****	3
s কৃথী	•1	~		>
ं प्रशी	Pes		****	>
th	****	****		5
শপ্তমী	****	****	. * * *	5
খনী		****	****	5
नगरी	** **	** **	,	5
Section 1	184	****	****	>
बकान भी	****	** 14	4 4 5+	`>
बानभी	***	4***	***	>
दरहाप्रभी		****	<**	>
ह कु फिन् री	****	***	• •	
পূৰ্ণিমা বা ৰ	মন বৈদ্যা	****		* 5

ি বিতীয় ভাগ চাকপাঠ, পাঠে প্রতিপদ বি দীয়া প্রভৃতি ভিথি দদ্ধহর কারণ ও চল্ডকলার কাম বৃদ্ধির বিষয় বিলোব অবগত হওয়া যাই-তে প্রের্থ

एक भारती যোড়শ সাতা। खनशाजी গর ধারিণী প্রকপরী इंस्ट्रेंप्टर शड़ी ভক্ষাধাত্ৰী পিডার পত্নী कंगा। সহোদরা ভগিনী ্**পু**ত্রপত্নী ৰভা (শাত্তী) **ৰাতা**নহী পিতানহী **ভা**ত্ৰধূ লাতুৰদা (নাদী) --

গিতৃ স্বশ (পিগী) ····	****		••••	>
नाङ्गानी (नामी) ···	****	e)		5 .:

34

উপরি উক্ত যোড়শ পুরুনীয়াদিগতে মা-ভূবং মান্য এবং ভক্তি প্রদর্শন করা মন্ত্র। মাত্রেরই উচিত, এই উদ্দেশেই ইহারা মাতৃ-পদ বাচ্যে কথিত হুইয়াছেন।

যোডশদান।

ভূমি	***	4477	e r •	3
আসন	****	4.07		*
ख्व	4 8 9		•••	>
ন ্ত শ্	***1	***	****	3
मीश	*17	****	****	5
सन्न	****	***	AFAT	5
তামুল	400		,,,,	5
ছত্ত	****	***	***	5
71年	****	** *	1941	5
गंना	•	***	44.1	15

-পুর্বাচননীয়

,	मा भागाता ।			和特別有關目		£ 2
शनीह जन		* ***	<i>a</i> , , ,	,		
(A	***	441	w 4a	; Š ý		
গাভংগ	15**	****	• •	>		
र्ग क	***		•	3		
শু জা	••	44.6	***	>		
ধূপ	***	•	-144	5		
यून मोन		****		Š		
रेस एवन र	***		*44 #	\$		
वागन न		•	v	5		

500,

তুর্গেছিদন প্রভৃতি ব্রুদ্বন্ধারেই থো-ডুল উপচারে পুজা কার্যা দাপম চইয়া নাজে। কলতঃ অনান্য কর্ম কার্ডোপলকে ব্যেড়ল উপ্র চারে পুজা হইলেও অনুমাত হানি নাই। অনেক ভানে নিজা নিজাই উপরিউজ বিধানে পূজ্ম সমাধা হইয়া থাকে।

वर्छ। मन श्रुद्रान्।

गर्यामात्र। अपार्क द एक ह चारशव **क**रिया बकादेवन ई टेन अ **1913** বামন 3 5 5

এই দকল পুরাণ নাধ্য অনেক উপপুরারী নিবিউ আছে। পুরাণপাঠে স্কিট বিবরণ রাজ্য নিগের বংগদিনরণ মন্ত্রত সম্ভাগি ঘটনাবলী নবং বিশেষং বংশের বিশেনং চরিত্র জালা যাই।
তে পাবে।

নাম্প্রিচক (নিমেরিণ) শক্ষা

সংখ্যানাতত শাল গুল্ প্রনার-বংখ্যা বেষিকা প্রং সংখ্যান পূর্ব থোঁতে নাম্পালা ভাষার সংখ্যা বোধক শাক গুল্লিক ব্রে ব্যবজ্জনাব্রানি বার প্রচলিত এক প্রানার ও সামান্তির ব্যবজ্জ আন্য প্রকারণ ভ্রমণো পুর্বোজ্জ প্রকারত নিম্নে নিধিত হট্লি, ধর্ণ—

मुं श	বৈ চক।	25	ণ্ৰ চব	भका।	•
মঞ্চ	214				
	西 亦	54	अवद ।	প্রথম	,
	্ৰি	ર્3ા	**	হিন্দীয়	1
	ত্রি	তর	73	ভূঙীয়	
	टकु ब्	धर्य	, ,	টকুৰ্ব	

悪くり	:1वाहकः	25	역점(5층 * -
可不	= (1) !		
Œ.	পুঞ্	क्षा कर्मत्	প্ৰক্ৰম
•	मुक्रे (४४)	4 3 ,5	49
, 9	महा	۹4 ,,	সপ্তৰ
!	का <i>नी</i>	¥4 11	4.94
70	A 4	5 3	र ग्रह्म
5.	ए अ	وف لمحدد	स अभि
33	eleth "i	**** "	三年1.0
58	म्बाममा .	55E	好 () () () ()
Wa,	द्धापन	\$950 ,,	अरक्षांतन
58	हर्न प्रमा	28 dl +>	८ इ.च्हाँ <u>क</u>
- 54	श्राप्त म	30 % m	अ १६३ म
15	ষোড়ে	System .	ষে ড় ং
33	স্ ণ্ড দ শ	of the fact of	मुख्य स्था
) 	W. STRA	36×1 24	অ্টার ল
>>	केमित गांच	3924 "	উন্বিংশ
1. R.	বিংশ ভ	2,0 27 33	तिर भ
35	একবিংশক্তি	्ञम "	একবিংশ

अंख, मि

र:१४) वित्र ह		পূরণ	्रं ठिक अस्त है
皇報	475.		
2.3	स्पानिकारिङ	२३ व्हाच्या १ १	व्यक्तिश्रमः 🔗
२७	রয়ে∏ব ্শভি	\$5#° ,5 (कर्णा निरुष
₹ 3	চৰুণিংশভি	35 W J. B	इ. दे न अह
' 8	প, প্রাব্যুক্ত ডি	5847	त्रकाति १ वर

ভীনবিংশতি ভীগতে ভ্রশিনী পূরণ বাচক শব্দ স্থান স্থাভভাগ সংগ্রান্ত বেধেক শব্দে (ভ্রম) প্রভাগের বেংগেও নিজাম হয়। ব্যা.— ভীনবিংশতিভ্যা, বিংশভিভ্যা এক্বিংশভিভ্যা ভ্রমণিভভ্যাইভাবি।

मा भाव। एक।

避弊			7 ¥
**			যুক্ৰিং ল িছ
29		••	मश्रीर गाउँ
2,5"	••	•	আটোরি শ্ভি
279	**	••	'উন্তি [ু] শং
4.	h#**	****	ত্ৰিং শৎ

भः यो भाव ।

मः था। विकि।

可够			स्रोम (
45	***		এক ত্রি•্শং
wt -	. A.	***	学 的图1
\$3	,.	•	उथ(प्रः, ४€
.98		*	চতুত্তিংশৎ
130	/ * 400		State Line
~ **	4841		वर्षे दिश्मक
49	10.04		शक्षा वृहस्त
34	*1=1	•	क्षवे दि भर
45	4***	<i>.</i>	T. Datificene
\$.	•••		ए स् (विश्वार
\$ Y. F	••	•••	এবচ গ্রন্থিংশৎ
Be	ack hip		ষ বা হিচয়ানিংশং
80	** *		এয়ো বা জেডহ'রি॰শ€
88	***	1 64	ठडु नहरू। दिशम् र
£¢.	. * 4.0		পঞ্চয়।বিংশৎ
**	**#*	•••	ষট্ড হারিংশং
.in		****	সপ্তচমারিংশৎ

मः भागाविक

			स्थ।
b-	**		काने। वा व्यक्तकाहिश्मर 🦿
13	***	•	উনপঞাশৎ
•	••		भेशाम ्
>			ত্রক প্রকাশ শ্র
**	, 41	; •	षा वा विश्वशंबद
4	***	**	হয়ে! যা বিশ্বস্থা 🗝 ৎ
tg		***	53. Marke
14	** *	•	श्र का शर्म भारत
ide	***		नकेश्री मह
14	***		न छ १ क्षां मर
٦	* **		चक्षी वा अनेगकामकः
٤3	1241	••	छेन हि
j, o	••••	***	य हि
ć,	** *	****	ध्रक्षां के
७२	4 4 5 4	•	ष्ट्रा विगठि
	•	••••	बद्धा दा किव्छि
98	****	t p.	চ ড়ু:যথি

अश्रम्। मान्यः।

मः शामिएकः

2017A			संग।
Maga And App	. 1 #1	***	शक्षाचि
die.	484.71		ষট্ শ্ৰিট
199 9			নগৃহটি
			খাই বা আইন জি
W.T.	****		উন্সঞ্জ
4.	****	•••	সপ্ত ি
,		***	একগণ্ডতি
25			দিমগুড়ি
48	10,94	***	† ভাগ্ৰান্ত
1	4.00	. ,	ए दुस्पक्ष कि
48	** 47		্নিংস্ <i>প</i> িজ
912.	•• •	***	गरेगलिं
*1	**		शहर वि
49	****	***	
Ŋb.	444	***	হাটো ক অফিনপ্ততি
45			西州新华
51,7°	-44		कारी ह
	rias,	61.4	, একাশীতি

भःशाबाहक।

138			নান ৷
ર	k (WP	**	হ;শীতি
٠.5	Ora	***	जार देखि
-8	4.6	*5	চতুরশীতি
-3	**	•	<u>প্রগশীতি</u>
+35	**		যড় শী ভি
P-7	***	79.6	मक्षांभी कि
سؤدو		•	অফাশীত
55	• •		উন নব[চ
৯০	** *	• •	নবভি
2:	****	**	এক ন ব্য
\$6	***	441	ষা বাগিনৰভি
ે લ	••	• •	ত্ৰয়ো বা ত্ৰিনবঙ্গি
:3	***	****	চভুনবিভি
53	***	****	শঞ্চন বভি
ಶಿಶ	***		য ়4ভি
29	****		সপ্ত নব ্তি
3>	*** *** ***	***	অন্টা বা অন্টনবভি

मश्याविष्ठ ।

অঙ্ক	•			स व
22	_	##<	/##·	संबद्ध कि
200	;			ं अंडि

সাঙ্কেতিক শব্দ ব্যৱহার ৷

স্থানবিশেষে কতক গুলিন শক্ত সংখ্যাত আ হার্য্য হয়, যথা---外事玉 きで সাক্ষেতিক শ্ৰু। 17.18 আং इंग् **इ**े ९ ₹: ₹·द्रादा উত্তর উং বি-দন্ত কিং কেম্পানি **cate** ··· ঠীব**লিক** 3 ... হয়স্থার ৎ 636 🔐 🤐 🧓 होनान FT:

সংখ্যাসার।

দাক্ষেতি ব	अक्।			প্রকৃত শব্দ।
जि:		****	*010	জিমা
ste	g#1 #	gan.		ভারিখ
R.C.	****	. ***		স ৰ্ণ
THE '	****	g h = 0	4+**	দিগর
নং	540	• «»		নম্বর
सिद	4 6 81	2041	•,	निद्यमन
শং	****	41.81	***	পরগণা
शुर हा ध	3	****	g p 4x>	পুনশ্চ
જૂેર	*4 , d e t	***	4011	পুংলিক
Mte	****	***		भारमी
ব্রং	****	af 4 o	****	প্রেশ
বং	****	42.44	****	বকলম
विः	1-91	16.	,60,91	বিম জিছ ম
বিং	. · · ·	***	2 ***	विशाबिश
বাং	1144	gra p. u 6	****	वाक्ला
ভাং	* #6 - ###	+***	ge ⊕### Sert	ভাণারী
স ং	4***	4+41	****	স্ব লগ
নাং	2000	9701 (Married	2:	ম ারক্ত

গাঙ্কে ডি	क् अस्।			প্রকৃত খব।
মেং	****	1	98 a ·	মেউর
त्मार	4***	4415	4043	শোকা ষ
মোং	****	446	****	মোভাবেক
जी:	****	P @ 1 4	\$100 5 E	গ্ৰীনিঙ্গ
* ग !୧	1 * #4		4+24	সাকিন
मः •	#4++	£	म १	মৃত বা সংবাদ
हिश् हिः	•••	****	****	क्लि
14.	****	****	****	इिगा व

